بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 06.01.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

वक़्फ़े जदीद के पैंसठवें (65) साल के दौरान जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली आर्थिक क़ुर्बानियों का वर्णन तथा छयासठवें (66) साल के प्रारम्भ की घोषणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 06 जनवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः एवं सूरः आले-इमरान की आयत 93 की तिलावत तथा अनुवाद के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने इस आयत के संदर्भ में फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि तुम वास्तविक नेकी को जो मुक्ति तक पहुंचाती है, कदाचित नहीं पा सकते सिवाए इसके कि तुम अल्लाह की राह में वह धन एवं वस्तुएँ ख़र्च करो जो तुम्हें प्यारी हैं। अतः अल्लाह तआला ने धन के बलिदान को इतना अधिक महत्त्व दिया है कि वास्तकिव नेकी जिससे ख़ुदा तआला प्रसन्न होता है, किन्तु शर्त यह है कि वह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए की जाए उस समय नेकी मानी जाएगी जब अपनी प्रिय वस्तु ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए प्राणियों की सहानुभूति में ख़र्च की जाए और फिर यह चीज़ मुक्ति का साधन बनती है।

अल्लाह तआला की राह में किसी का प्रिय धन ही स्वीकारीय होता है तथा फिर वह क़ुर्बानी करके अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए दे, यही वास्तविक नेकी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि दुनिया में इंसान धन से अत्यधिक प्यार करता है। वास्तविक तक़्वा तथा ईमान की प्राप्ति के लिए फ़रमाया-لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ अर्थात वास्तविक नेकी को कदाचित न पाओगे, जब तक तुम अति प्रिय चीज़ ख़र्च न करोगे, क्यूँकि अल्लाह के प्राणियों के साथ सहानुभूति तथा सुन्दर व्यवहार का एक बड़ा भाग धन को ख़र्च करने की आवश्यकता बतलाता है। मानव जाति तथा अल्लाह के प्राणियों से सहानुभूति एक ऐसी चीज़ है जो ईमान का दूसरा अंश है, जिसके बिना ईमान सुदृढ़ एवं सम्पूर्ण नहीं होता। जब तक बलिदान न करे दूसरों को

लाभ कैसे पहुंचा सकता है। इस आयत में इस बलिदान की भावना की शिक्षा एवं निर्देश दिया गया है। अतः धन का अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करना भी इंसान के सौभाग्य तथा तक़्वा पर चलने का स्तर एवं कसौटी है।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के जीवन में अल्लाह के लिए वक़्फ़ का स्तर एवं कसौटी वह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आवश्यकता बयान की तथा वे अपने घर का पूरा सामान लेकर उपस्थित हो गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी आप अलै. के मिशन को पूरा करने के लिए, लिट्रेचर के प्रकाशन तथा इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए उच्चतम नमूना हज़रत हकीम मौलाना नूरुददीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने क़ायम फ़रमाया। आप रज़ी. ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा कि मैं आप अलै. की राह में क़ुर्बान हूँ, मेरा जो कुछ है मरा नहीं, आप अलै. का है। हज़रत पीर व मुर्शिद, मैं सम्पूर्ण सत्य भावना के साथ निवेदन करता हूँ कि मेरा पूरा धन दौलत यदि दीन के प्रकाशन में ख़र्च हो जाए तो मैं सफल हो गया।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनेक सहाबी रज़ी. थे जिन्होंने अपने अपने सामर्थ्यानुसार ऐसी ऐसी क़ुर्बानियाँ दीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इन बलिदानों को देख कर मुझे आश्चर्य होता है। क़ुर्बानियों की यह जाग जमाअत के लोगों को ऐसी लगी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जारी ख़िलाफ़त के निज़ाम में भी अल्लाह तआला हर दौर में क़ुर्बानियाँ करने वाले प्रदान करता चला आ रहा है जो अपनी प्रमुख आवश्यकताओं को पीछे छोड़ कर बढ़ बढ़ कर बलिदान पेश कर रहे हैं। जमाअत के लोग अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बढ़चढ़ कर इसमें भाग लेते हैं। ऐसे उदाहरण हैं कि क़ुर्बानी करने वाले न केवल सांसारिक लाभ उठा रहे हैं बल्कि उनके ईमान में भी वृद्धि होती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने दुनिया भर के विभिन्न देशों से जमाअत के दोस्तों की धन की क़ुर्बानी के ईमान वर्धक वृत्तांत पेश करते हुए फ़रमाया कि लाईबेरिया के मुअल्लिम साहब लिखते हैं कि वक़्फ़े जदीद की वसूली के लिए नौ-मुबाओीन की एक जमाअत में एक ख़ादिम के घर गया तो उनकी माता जी ने घर में पैसे न होने के कारण असमर्थता प्रकट की, हम वापस आ गए। थोड़ी देर बाद वह ख़ादिम दौड़ता हुआ आया तथा अपनी स्कूल फ़ीस के दो सौ पचास लाईबेरियन डालर चन्दे में देते हुए कहा कि हमारा घर इस तहरीक से वंचित न रहे। कुछ अवधि पश्चात उस ख़ादिम ने बताया कि मेरे एक रिश्तेदार ने मेरे स्कूल की आवश्यकताओं के लिए 2500 डालर की धन राशि मुझे भेजी है जिससे मैंने स्कूल की फ़ीस भी अदा की तथा अन्य आवश्यकताएँ भी पूरी कर लीं। अल्लाह तआला ने मेरी क़ुर्बानी से दस गुना बढ़ा कर मुझे प्रदान किया है। इस तरह अल्लाह दिलों में ईमान व आस्था पैदा करता है।

इंडिया से इंस्पैक्टर साहब वक़्फ़े जदीद कहते हैं कि मैलिया पालम, तामिलनाडु जमाअत में एक निष्ठावान अहमदी ने 2014 में बैअत की थी, वे कहते हैं कि जब मैंने बैअत की थी उस समय मैंने अपना वक़्फ़े जदीद का वादा चार हज़ार रुपए लिखवाकर अदायगी कर दी थी, क्यूँकि इतनी ही सुविधा थी मेरे पास, तथा हर वर्ष मैं फिर उसके बाद बढ़ाता भो चला गया और अल्लाह तआला इसके कारण मेरे व्यापार में भी उन्नति देता चला गया। फिर कुछ समय पश्चात शेष घर के लोगों ने भी बैअत कर ली, और कहते हैं अल्लाह तआला की कृपा से आज मेरा वक़्फ़े जदीद का चन्दा पाँच लाख रुपए हो गया तथा लॉक-डाउन के बावजूद मेरे चन्दों की बरकत के कारण व्यापार में मुझे कोई हानि नहीं हुई बल्कि और अधिक बढ़ता ही चला गया और अल्लाह के फ़ज़्ल ने अब मेरा व्यापार इंडिया से निकाल कर थाई लैंड में भी फैला दिया है। ये हैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल, जूए का कारोबार नहीं है, रुपया लगाया, मेहनत की, कारोबार किया, अल्लाह तआला की राह में ख़र्च किया तो अल्लाह तआला ने कई गुना बढ़ौतरी भी फ़रमा दी।

फिर एक और उदाहरण है इंडिया का, माला पुरम इंडिया के इंचार्ज ने लिखा है कि नाज़िम साहब माल तथा इंस्पैक्टर साहब वक़्फ़े जदीद माली साल के अन्त होने के कारण दौरे पर थे। वहाँ एक निष्ठावान अहमदी व्यापारी रहमान साहब का फ़ोन आया कि आप मेरी कम्पनी में आ जाएँ, मैंने अपनी कम्पनी में एक नया भाग बनाया है, वहाँ दुआ करवानी है, और जब हम वहाँ गए तो बिना पूछे दस लाख का चैक पेश किया। कहते हैं कि यह रक़म मैंने अपनी एक प्रापर्टी की रजिस्ट्री के लिए रखी हुई थी किन्तु आपके आने के कारण वक़्फ़े जदीद में अदायगी कर दी है तथा रजिस्ट्री की अवधिक आगे करवा ली। कुछ दिनों के पश्चात, यह श्रीमान जी कहते हैं कि एक बड़ी धन राशि उनको बिना किसी प्रयास के मिल गई, जो इन श्रीमान जी की आवश्यकताओं से भी अधिक थी।

इंडोनेशिया के अमीर साहब लिखत हैं कि एक छोटी जमाअत से सम्बंध रखने वाले अब्दुर्रहीम साहब कहते हैं कि हर साल चन्दा वक़्फ़े जदीद की अदायगी करता हूँ। वर्ष 2019-20 मेरे लिए कठिन वर्ष थे। नया कारोबार करने के कारण नौकरी छोड़ दी थी, व्यापार भी न चला तथा जमा पूंजी भी समाप्त हो गई। वक़्फ़े जदीद के वादे को पूरा करने की कोई व्यवस्था न बन रही थी, हर रोज़ तहज्जुद में दुआ करता और ख़लीफ़तुल मसीह को पत्र भी लिखता। अतएव किसी न किसी तरह अपने वादे को पूरा कर दिया। कुछ दिनों के पश्चात ही उसी स्थान से नौकरी के लिए बुलाया गया, जहाँ से सात वर्ष पूर्व इस्तीफ़ा दिया था। यह केवल अल्लाह तआला की कृपा है कि 51 वर्ष की आयु में एक स्थाई आय की अवस्था पैदा हो गई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने सैनिगाल, सीरालियोन, गैम्बिया, कांगो कंशासा तथा मैसीडोनिया में जमाअत के लागों के भी कुछ ईमान वर्धक वृत्तांत पेश करने के बाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला इन क़ुर्बानी करने वालों को अपने स्तर बढ़ाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जो अधिक अच्छी स्थिति में हैं परन्तु क़ुर्बानी की भावना उच्च स्तरीय नहीं हैं वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

की इस बात को समझने वाले हों कि ख़ुदा तुम्हारी सवेाओं का कदापि मोहताज नहीं, यह तुम पर उसका फ़ज़्ल है कि तुमको सेवा करने का अवसर देता है। अल्लाह तआला जमाअत के मुख्याओं को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने 2023 में वक़्फ़े जदीद के 66वें वर्ष का ऐलान करते हुए फ़रमाया कि चन्दा वक़्फ़े जदीद में गत वर्ष जमाअत के लोगों ने एक करोड़ बाईस लाख पन्द्रह हज़ार पाउंड की क़ुर्बानी पेश की है जो कि इंडिया की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद पिछले साल की तुलना में नौ लाख अट्ठाईस हज़ार पाउंड अधिक है, अल-हमदुलिल्लाह।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने वसूली की दृष्टि से विश्व की विभिन्न जमाअतों की पोज़ीशन का ऐलान फ़रमाया जिसके अनुसार पहली दस जमाअतों की स्थिति कुछ इस प्रकार है- बर्तानिया, कैनेडा, जर्मनी, अमरीका, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत और बैल्जियम।

प्रति व्यक्ति वसूली की दृष्टि से पहली दस जमाअतें- घाना, मारीशस, नाईजेरिया, बर्कीना फ़ासो, तंज़ानिया, लाईबेरिया, गैम्बिया, योगेन्डा, बैनिन और सीरालियोन हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इस वर्ष सम्मिलित होने वालों की संख्या में इकसठ हज़ार निष्ठावान लोगों की बढ़ौतरी हुई है और सामूहिक संख्या अब पन्द्रह लाख छः हज़ार हो गई है। हुज़ूर-ए-अनवर ने बर्तानिया, कैनेडा, जर्मनी, अमरीका, पाकिस्तान, भारत तथा आस्ट्रेलिया के देशों की जमाअतों की पोज़ीशन का ऐलान फ़रमाया जिसके अनुसार वसूली की दृष्टि से भारत के पहले दस प्रदेश- केरला, तामिलनाडू, कर्नाटक, जम्मू कशमीर, तिलंगाना, उडीशा, पंजाब, वैस्ट बंगाल, महाराष्ट्र, देहली।

तथा पहली दस जमाअतें- कोएम्बटूर, हैद्राबाद, क़ादियान, करुलाई, पित्था पीरियम, बैंगलोर, मेला पालियम, कलकत्ता, कालीकट तथा केरंग हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकतें अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131